ॐ

तस्माद्वा इन्द्रो ऽतितरामिवान्यान्देवान्स ह्येनन्नेदिष्ठं पस्पर्श स ह्येनत्प्रथमो विदांचकार ब्रह्मेति ।।३ ।।

इन्द्र अन्य देवों की अपेक्षा श्रेष्ठ सिद्ध हुए, क्योंकि उन्होंने ब्रह्म को अत्यन्त निकट से स्पर्श किया। सबसे पहले इन्द्र ने ही जाना कि यक्ष ब्रह्म ही था।

१३ जनवरी १९३६ को संस्थापित दिव्य जीवन संघ के पावन एवं शुभ अमृत महोत्सव, १३ जनवरी २०११ के उपलक्ष्य में प्रकाशित

१३ जनवरी १९३६ को संस्थापित द डिवाइन लाइफ सोसायटी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में प्रकाशित

ॐ

१३ जनवरी १९३६ को संस्थापित दिव्य जीवन संघ के अमृत महोत्सव के शुभ अवसर पर मुद्रित

१३ जनवरी १९३६ को संस्थापित द डिवाइन लाइफ सोसायटी के अमृत महोत्सव के शुभ अवसर पर मुद्रित

ॐ

१३ जनवरी १९३६ को संस्थापित दिव्य जीवन संघ के अमृत महोत्सव के शुभ अवसर पर प्रकाशित

१३ जनवरी १९३६ को संस्थापित द डिवाइन लाइफ सोसायटी के अमृत महोत्सव के शुभ अवसर पर प्रकाशित

ब्रह्मचर्य-साधना :

विवाह करें अथवा न करें १

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

क्या ब्रह्मचर्य सम्भव है?

यद्यपि संसार में विविध प्रकार के प्रलोभन तथा चित्त-विक्षेप हैं, तथापि यहाँ रहते हुए भी ब्रह्मचर्य का अभ्यास करना सर्वथा सम्भव है। प्राचीन काल में अनेकों ने इसमें सफलता प्राप्त की थी और आज भी अनेक लोग हैं। अनुशासित जीवन, सात्त्विक मिताहार, धर्मग्रन्थों का स्वाध्याय, सत्संग, जप, ध्यान, प्राणायाम, दैनिक अन्तरावलोकन तथा परिपृच्छा, आत्म-विश्लेषण तथा आत्म-सुधार, सदाचार, यम, नियम तथा गीता के सतरहवें अध्याय के उपदेशानुसार शारीरिक, वाचिक तथा मानसिक तपों का अभ्यासहृहृये सभी इस लक्ष्य की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। लोग अनियमित, अनैतिक, अमर्याद, अधार्मिक तथा अनुशासनहीन जीवन व्यतीत करते हैं। जिस प्रकार हाथी अपने ही शिर पर धूल डालता है, वैसे ही लोग अपनी मूर्खतावश अपने ही ऊपर कठिनाइयों और संकटों को लाते हैं।

ब्रह्मचर्य का अभ्यास करने वाले व्यक्ति प्रायः यह शिकायत करते हैं कि ब्रह्मचर्य के कारण उन्हें मानसिक थकावट होती है। यह केवल मन का धोखा है। कभी-कभी आपको मिथ्या भूख लगती है। ऐसी अवस्था में जब आप वास्तव में भोजन करने के लिए बैठते हैं, तो आपको वास्तविक अच्छी भूख नहीं होती है और आप कुछ खाना नहीं खा पाते। इसी भाँति, मिथ्या मानसिक थकान है। यदि आप ब्रह्मचर्य पालन करेंगे, तो आपको अपरिमित मानसिक शक्ति प्राप्त होगी। आप इसे सदा अनुभव नहीं कर सकेंगे। जिस प्रकार एक पहलवान जो साधारणतया अपने को एक प्रसामान्य व्यक्ति अनुभव करता है और अखाड़े में अपने शारीरिक बल को प्रकट करता है, वैसे ही आप भी अवसर उपस्थित होने पर अपनी मानसिक शक्ति को प्रकट करेंगे।

इन्द्रिय-निग्रह हानिकारक नहीं है। यह शक्ति को सुरक्षित रखता तथा अपरिमित मनोबल तथा शान्ति प्रदान करता है। अति-विषय-सुख-निरति नैतिक तथा आध्यात्मिक दिवालियेपन, असामयिक मृत्यु तथा मनःशक्ति, प्रतिभा तथा ग्रहण-शक्ति की क्षति का कारण बनती है।

ब्रह्मचर्य के अभ्यास के परिणाम-स्वरूप कोई संकट अथवा भीषण रोग अथवा विविध प्रकार की मनोग्रन्थियों जैसे कोई अनिष्ट फल नहीं होते, जिनके लिए पाश्चात्य मनोवैज्ञानिक भूल से उसे उत्तरदायी ठहराते हैं। उन्हें इस विषय का व्यावहारिक ज्ञान नहीं है। उनकी यह निराधार तथा गलत धारणा है कि अतृप्त काम-शक्ति प्रच्छन्न रूप से स्पर्श-भीति आदि जैसी विविध प्रकार की मनोग्रन्थियों का आकार धारण कर लेती है। इस मनोग्रन्थि के कुछ अन्य कारण हैं। यह मनोग्रन्थि विविध कारणों से उत्पन्न अत्यधिक ईर्ष्या, घृणा, क्रोध, चिन्ता तथा उदासी के फल-स्वरूप होने वाली मन की विकृत अवस्था है।

इसके विपरीत, थोड़ा-सा भी आत्म-संयम अथवा ब्रह्मचर्य का थोड़ा-सा भी अभ्यास एक आदर्श उद्दीपक बलवर्धक औषधि है। यह मनोबल तथा मानसिक शान्ति प्रदान करता, मन तथा स्नायुओं को अनुप्राणित करता, शारीरिक तथा मानसिक शक्ति के संरक्षण में सहायता करता, स्मृति, संकल्प-शक्ति तथा मेधा-शक्ति की वृद्धि करता, अत्यधिक बल, ओज तथा जीवन-शक्ति प्रदान करता, शरीर-गठन का नवीकरण करता, कोशाणुओं तथा ऊतकों का पुनर्निर्माण करता, पाचन-शक्ति को सबल बनाता तथा दैनिक जीवन-संग्राम में कठिनाइयों का सामना करने के लिए शक्ति प्रदान करता है। धैर्य तथा साहस के विशेष सद्गुणों का ब्रह्मचर्य के सम्पोषण से घनिष्ठ सम्बन्ध है। एक अखण्ड ब्रह्मचारी संसार को हिला सकता, प्रभु यीशु की भाँति सागर की लहरों को रोक सकता, पर्वतों को ध्वस्त कर सकता तथा ज्ञानदेव की भाँति प्रकृति तथा पंचमहाभूतों पर शासन कर सकता है। त्रैलोक्य में उसके लिए कोई भी वस्तु अप्राप्य नहीं है। सारी सिद्धियाँ तथा ऋद्धियाँ उसके चरणों में लोटती हैं।

भोगवादियों का मूर्खतापूर्ण तर्क

कुछ अज्ञानी कहते हैंह्नह्न''काम को रोकना ठीक नहीं है। हमें प्रकृति के विरुद्ध नहीं जाना चाहिए। भगवान् ने सुन्दरी युवतियों का निर्माण क्यों किया है? उनके इस सर्जन में कुछ-न-कुछ अभिप्राय तो होना ही चाहिए। हमें उनका उपभोग करना चाहिए तथा यथासम्भव अधिक-से-अधिक सन्तान उत्पन्न करनी चाहिए। यदि सभी व्यक्ति संन्यासी बन जायें तथा जंगलों में चले जायें, तो इस संसार का क्या होगा? यह समाप्त हो जायेगा। यदि हम काम को रोकेंगे, तो हमें रोग लग जायेंगे। हमारे प्रचुर सन्तान होनी चाहिए। यदि हमारे प्रचुर बच्चे होते हैं, तो घर में आनन्द छाया रहता है। विवाहित जीवन के सुख का वर्णन शब्दों में नहीं किया जा सकता है। यही जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य है। मैं वैराग्य, त्याग, संन्यास तथा निवृत्ति को पसन्द नहीं करता।'' यही उनका भोंडा दर्शन है। वे लोग चार्वाक तथा विरोचन के साक्षात् वंशज हैं। वे भोगवादी विचारधारा के आजीवन सदस्य हैं। अतिभोजिता ही उनके जीवन का लक्ष्य है। उनके अनुयायियों की संख्या बहुत बड़ी है। वे शैतान के मित्र हैं। उनका दर्शन कितना प्रशंसनीय है!

जब वे अपनी सम्पत्ति, पत्नी तथा सन्तान खो बैठते हैं, जब वे किसी असाध्य रोग से पीड़ित होते हैं, तब कहते हैंह्नह्न''भगवान्! मुझे इस भयंकर रोग से मुक्त कीजिए। मेरे पापों के लिए मुझे क्षमा कर दीजिए। मैं महापापी हूँ।''

(अनूदित)

घृणा अस्त्यात्मक गुण नहीं है। घृणा नाम की कोई वस्तु ही नहीं है। इसका अर्थ हुआ कि वहाँ प्रेम नहीं है, करुणा नहीं है। अतः यह केवल प्रेम के अभाव की स्थिति का द्योतक है और जो व्यक्ति प्रेम और करुणा का अर्जन करता है, उसमें घृणा नहीं रह जाती। जिस क्षण प्रेम आता है, घृणा अदृश्य हो जाती है; क्योंकि अस्त्यात्मक ही सत्य है, नास्त्यात्मक सत्य नहीं होता। जब अस्त्यात्मक गुणों का उपार्जन किया जाता है, तो नास्त्यात्मक गुणों का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। **स्वामी चिदानन्द**

कर्म-सम्बन्धी सत्य

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

हम सब यहाँ पर अपने प्रारब्ध कर्मों का भुगतान करने के लिए आये हुए हैं। हमें मानसिक और शारीरिक रूप से जो भी विभिन्न सुख-दु:ख भोगने पड़ते हैं, वे सब कर्मों के विधान के अनुसार ही निश्चित किये गये होते हैं। इसमें न तो कुछ अधिक रहस्य है और न ही कुछ भी अपरिहार्य है। यह अटल भी नहीं हैं, क्योंकि यह हमने ही रचने हैं। हमने ही इनकी रचना की हुई है।

इसलिए इसमें न तो कोई अत्याचार की भावना है, न ही कोई लाचारी या विवशता की भावना है। जिस प्रकार अपने भविष्य का निर्माण करने वाले हम स्वयं ही हैं, इसी प्रकार अपने वर्तमान प्रारब्ध के निर्माता भी हम स्वयं ही हैं। दोनों ही प्रकार से यह हमारे हाथ में है। दोनों ही रूपों में करने-कराने वाले हम ही हैं। हर प्रकार से चाबी हमारे ही हाथ में है। इसलिए हमारी पदवी सर्वोच्च है। इस बात को भली-भाँति जान-समझ लेना चाहिए।

कर्मों के विधान के परिणाम-स्वरूप ही हम सब यहाँ आये हैं। 'यहाँ' से अभिप्राय सामान्य रूप में इस धरती पर जन्म लेने से और विशेष रूप में 'यहाँ' इस समय 'शिवानन्द आश्रम' से है। हम सब अपने कर्मों का भुगतान कर रहे हैं, किन्तु यह कोई बड़ी बात नहीं है। बड़ी बात तो इसकी उत्पत्ति, इसकी सही-सही कार्यान्विति तथा इसकी प्रकृति को जानना है।

यह कर्म हम पर बलात् थोप नहीं दिया गया है, हमने इसे अर्जित किया है। यह हमारी अपनी रचना है और हम उच्चतर दर्शन का, श्रेष्ठतर समझ का उपयोग करते हुए इसके प्रभाव को अस्वीकार करके अपने प्रारब्ध-कर्म-विधान को निष्प्रभ (व्यर्थ) कर सकते हैं।

कर्म का प्रभाव शरीर पर, स्नायु-तन्त्र पर, मन और बुद्धि (विचार, भावनाएँ, अभिमत, मनोभाव इत्यादि) पर होता है।

''किन्तु मैं इन सबसे भिन्न हूँ, मैं परात्पर परमात्मा, सदा-सर्वदा सबसे अप्रभावित हूँ। मुझे न हँसने की आवश्यकता है, न ही रोने की। मैं सदा परिपूर्ण हूँ। परम आनन्द-स्वरूप हूँ, मैं परम शान्ति हूँ। समस्त अन्धकारों से परे सदा प्रकाशमान, परम प्रकाश हूँ। कर्म मुझे छू नहीं सकता। मैं उस पर हँसता हूँ। मैं समस्त घटनाओं का, शरीर के सभी परिवर्तनों का, मन की सभी अवस्थाओं का, हर हाल का निरासक्त मूक द्रष्टा हूँ।''

यह मुख्य मूलभूत गुह्य दीक्षा है, जो हमारे परम पावन गुरुदेव ने हम सबको प्रकट रूप से खुल कर दी हुई है। यह स्वर्णिम कुंजी है। कर्म-विधान अपना कार्य करता है। आत्मा अप्रभावित शान्त रहती है। क्योंकि आत्मा इससे परे अतीत, अक्षुण्ण और असम्बद्ध है; इसलिए आत्मा द्रष्टा हो कर रहती है। यदि इस पर दृढ़ रहा जाता है, यदि व्यक्ति इस आन्तरिक केन्द्र पर दृढ़तापूर्वक स्थिर रहता है और वह जो वास्तव में है वही रहती है, तब कर्म-विधान स्वयं उसके समक्ष प्रकट हो जाता है। अनुभव आते और जाते रहते हैं, किन्तु व्यक्ति वही और वैसा ही रहता है और इसी की आवश्यकता है।

और यह अवधि (जब व्यक्ति इस प्रकार कर्म के विधान को प्रकट होते और निकल जाते हुए देखता है) अपने भीतर मोक्ष की क्षमता, ईश्वरानुभूति की और उद्‌बोधन की क्षमता भी रखती है। इसलिए इस अवधि को अभ्यास, योग और साधना से परिपूरित किया जा सकता है। इसे पुरुषार्थ से भरा जा सकता है। इस नये सुचयनित और विवेक-सम्पन्न कर्म से भरा जा सकता है। यह एक सर्जनात्मक अवधि है, एक रचनात्मक समय तथा एक समृद्ध काल है। यह ऐसा समय है जो आपके भविष्य का निर्माता है।

वर्तमान समय का महत्त्व इसी बात में निहित है कि इस समय में आपका प्रारब्ध-कर्म प्रकटित हो रहा होता है। यह अपने-आपमें वरदान का रहस्य लिये हुए है, अनन्त विकास की सम्भावना लिये हुए है। पूर्णता तक पहुँचने के ऊर्ध्वगमन के लिए जो-कुछ भी आवश्यकताएँ हैं, उन सबको यह अपने भीतर लिये हुए है। अत: यह जीवन का सार, जीवन जीने का सार (जो कि आकांक्षा, प्रयास और प्राप्ति हो जाने की प्रक्रिया है) अपने में समाहित किये हुए है।

'स्वयं को जानो और मुक्त हो जाओ', यह व्यर्थ में ही कह देने के लिए नहीं था। यह मुख से निकाल देने के शब्द मात्र नहीं थे। यों ही हवा में छोड़ देने के लिए विचार मात्र नहीं थे। यह शक्ति-सम्पन्न शब्द हैं। यह पूर्णता और मोक्ष के लिए आवाहन है। यह हमारी चेतना की गहराई तक उतर जाने चाहिए और हमें जागृति और सक्रिय पुरुषार्थ की ओर उन्नत कर देना चाहिए। जीवन्त शब्द हैं। जो इस आह्वान का उत्तर देता है, वह वास्तव में धन्य है। मध्य एशिया के गुरु यीशु ने कहा हैह्नह्न''जिसके आँखें हैं, वह देख लेगा; जिसके कान हैं, वह सुन लेगा; माँगने से ही कुछ मिलेगा; खोज करोगे, तभी प्राप्त करोगे; खटखटाओगे, तभी तुम्हारे लिए द्वार खुलेंगे।''

अत: आपमें से प्रत्येक को वह दृष्टि उपलब्ध हो जो देख पाये। प्रत्येक को वह सतर्क ग्रहणशीलता प्राप्त हो जो सुन और समझ सके, देख और जान सके। और आप सब ही अपने जीवन को एक कभी समाप्त न होने वाली खोज बना लें! मोक्ष के द्वार पर जाने वाली एक सतत खटखटाहट, सच्ची और वास्तविक आकांक्षा सहित प्रार्थना के द्वारा, ध्यान के द्वारा और मनन के द्वारा की जाने वाली एक माँग बना लें! आपका सम्पूर्ण जीवन ही अपने जन्मसिद्ध अधिकार को, अपनी धरोहर को प्राप्त करने की एक सतत माँग बन जाये! एक सांसारिक पिता भी रोटी की माँग करने वाले बच्चे को पत्थर नहीं देता। वह परम पिता तो जीवन-रूपी रोटी प्रदान करने वाला है।

यह दृष्टान्त कोई मनोरंजक लघु कथा नहीं है। यह तात्कालिक अर्थ को धारण किये हुए है। यह एक प्रयोजन से दी गयी है और इसे पूर्ण जागरूकता से, इसके महत्त्वपूर्ण अर्थ के साथ ग्रहण किया जाना चाहिए। दृष्टान्त हमारे लिए गूढ़ अर्थ लिये हुए होते हैं। इनमें हमारे लिए महान् सन्देश और गहन निहितार्थ होते हैं।

अत: अपने जीवन को परम लक्ष्य की ओर का एक सतत ऊर्ध्वारोहण बनायें। यही वास्तविक जीवन है। इसके लिए हम सब यहाँ आये हैं। यदि इसे समझ कर जीवन में उतार लिया जाये, तो आपका सर्वोच्च भला आपके अपने हाथ में आ गया समझिए। तब परम तत्त्व की उपलब्धि का होना उतना ही सुनिश्चित है जितना सूर्य का पूर्व की ओर से उदय होना। आप इसे समझें और अपने जीवन को विजयी बनायें!

(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)

इतिहास एवं पुराण १

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

इतिहास एवं पुराणों का उदय

जिस ब्रह्म का ऋषि गण श्रद्धा-युक्त विस्मय की भावना से मनन करते हैं, उसका साक्षात्कार सर्वोत्तम प्रकार के थोड़े से व्यक्ति अथवा उपनिषदों में वर्णित साधना-पथ पर चलने की क्षमता रखने वाले कुछ लोग ही कर सकते हैं। किन्तु धर्म को तो ब्रह्म-साक्षात्कार के क्षेत्र से इतर कम महत्त्वपूर्ण स्तरों के व्यक्तियों की भावनात्मक आवश्यकताओं के बारे में भी सोचना है।

दर्शन का कोई भी इतिहासकार इस गलत धारणा से मुक्त नहीं हो पाया है कि वेद और उपनिषद् तथा परवर्ती वेदान्त-दर्शन के ग्रन्थों के बाद जो-कुछ भी धार्मिक विवेचन किया गया, वह अधिक-से-अधिक जन-साधारण की स्वाभाविक दुर्बलताओं के साथ किया गया एक समझौता है या दूसरे शब्दों में, उन्हें दी गयी एक छूट है।

यहाँ यह कहने की आवश्यकता नहीं कि यदि हिन्दू-धर्म वेदों, उपनिषदों के दिव्य दर्शन तथा बुद्धि-प्रधान वेदान्त की तत्त्वमीमांसा के साथ ही निःशेष हो जाता, तो वर्षों पूर्व ही इसका अन्त हो गया होता तथा बेबीलोन, ग्रीस और मिश्र की संस्कृतियों के समान केवल इसकी स्मृति ही शेष रह जाती। हिन्दुओं की विचार-धारा की विश्व-व्यापकता ही उनके धर्म को विदेशी संस्कृतियों के प्रहारों से बचा पायी है तथा इसी के कारण यह समय के उतार-चढ़ावों के बीच भी सुरक्षित रह पाया है।

भारत का महान् धर्म मात्र बुद्धि और तर्क के क्षेत्रों अथवा केवल अनुभवजन्य आवश्यकताओं तक ही सीमित नहीं है। इसका सम्बन्ध पूरे मानव-समुदाय से है। मानव-आकांक्षाएँ पाश्चात्य या प्राच्य नहीं हुआ करतींह्लह्लवे तो समूचे विश्व की होती हैं। विस्मयकारी ब्रह्म तक सेवक, किसान, सैनिक, व्यापारीह्लह्लसभी की पहुँच होनी चाहिएह्लह्लइस प्रकार कि उनके बौद्धिक स्तर के अनुरूप वह उनके लिए बोधगम्य हो तथा उनकी प्रतिभा और स्वभाव के लिए व्यावहारिक सिद्ध हो सके। उपनिषदों के अनुसार विशेष अर्हताओं वाले व्यक्तियों के लिए ही ब्रह्म उपगम्य है; परन्तु पुराणों ने सामान्य मानवों के लिए भी ब्रह्म को सुगम बनाया है।

रामायण तथा महाभारत भारतवर्ष के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक महाकाव्य हैं। महाभारत ग्रन्थ का आधार परम्पराएँ, पौराणिक कथाएँ, इतिहास, दर्शनशास्त्र तथा रहस्यवाद के विभिन्न तत्त्व हैं। रामायण प्रत्यक्ष रूप से एक इतिवृत्त (इतिहास) है, जिसमें एक ऐसे आध्यात्मिक महापुरुष के महान् कार्यों का वर्णन किया गया है जो इस धरती पर मानव-समुदाय के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करने के लिए अवतरित हुआ था। महाभारत में अलौकिक एवं अद्भुत तत्त्वों के आकाश में उड़ान भरी गयी है, परन्तु

साथ-ही-साथ मानव-जीवन के लक्ष्य के स्वरूप को बहुत सरल ढंग से प्रतिपादित भी किया गया है।

अलंकृत शैली में प्रस्तुत वाल्मीकि कृत रामायण में प्रारम्भ से अन्त तक मानव-हृदय को आन्दोलित करने वाली सामग्री है। इस ग्रन्थ का पठन करने के पश्चात् भावनाओं का उदात्तीकरण हो जाता है तथा मानव-मन अनजाने में ही संजीवित हो कर मानवोचित सहृदयता, भ्रातृ-भाव, पुत्रोचित प्रेम, नियम-पालन, सेवा-भाव, ऋजुता (ईमानदारी), संकल्प-दृढ़ता, असीमित परोपकारिता, सत्य के अटल अनुसरण की भावभूमियों में प्रवेश कर जाता है।

महाभारत महर्षि व्यास की प्रतिभाशाली अन्तर्दृष्टि की सर्वोत्तम उपज है। यह ग्रन्थ भावनाओं एवं संवेगों की एक ऐसी असीमित ऊँचाई तक ले जाता है जहाँ से उन्हें नैतिक और आध्यात्मिक आदर्शों की पूर्णता के शिखर दृष्टिगोचर होते हैं। पाठक ग्रन्थकार के सशक्त विचारों की ऊर्मियों से टकराता हुआ डूबता-उतराता रहता है।

वाल्मीकि और व्यास भारतीय संस्कृति के वास्तविक आधार-स्तम्भ हैं। जब तक हिन्दुत्व जीवित रहेगा, इन दोनों महापुरुषों को स्मरण किया जाता रहेगा।

रामायण और महाभारत के महान् पात्रह्नह्नराम, लक्ष्मण, भरत, सीता, हनुमान्, कृष्ण, युधिष्ठिर, भीष्म, अर्जुन, द्रौपदीह्नह्नभारत में नन्हें से विद्यार्थी के लिए भी आदर्श का पर्याय बन गये हैं। इनका स्मरण करते ही ऐसा प्रतीत होने लगता है कि व्यक्तित्व का प्रत्येक अणु एक असामान्य उच्चता से परिपूरित हो गया है। इन दोनों ग्रन्थों ने भारतीय मानस के समक्ष एक ऐसे शक्तिशाली परन्तु करुणामय भगवान् का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है जो समस्त जीवों का भाग्यविधाता है तथा उनकी कृपा-दृष्टि से कृतार्थ होने को आतुर मानवों का सहायक है। इन्हीं ग्रन्थों के प्रभाव के कारण युगों-युगों से भारत निर्माण के पथ पर अग्रसर होता रहा है और भारतीय मानस धार्मिकता से सन्तृप्त रहा है। इन्हीं ग्रन्थों ने ब्रह्म-साक्षात्कार को जीवन के लक्ष्य के रूप में प्रतिष्ठित करके इस धारणा को जन्म दिया है कि इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ऋषियों और ईश्वर के अनेकानेक भक्तों से सहायता प्राप्त हो सकती है। ये ग्रन्थ ही हिन्दू-जनों के हृदयों को एक-दूसरे के निकट ला सके हैं।

आज भारत एक शक्तिशाली राष्ट्र है और वह इसके अस्तित्व को खतरे में डालने वाले किसी भी विदेशी प्रहार का सामना करने के लिए सक्षम है। इसका कारण यही है कि वाल्मीकि और व्यास के सर्वोत्कृष्ट मस्तिष्कों ने राष्ट्र के रक्त में एक विलक्षण नैतिक साहस भर दिया है। इन दोनों महापुरुषों के विचारों ने भारतीय मानस पर जो प्रभाव डाला है, वह इतना गहन है कि इसका सही-सही मूल्यांकन करना असम्भव लगता है। उनका प्रभाव अमिट है; क्योंकि उनकी पहुँच मानव-सत्ता के मूल-तत्त्व तक रही है।

ये दोनों ग्रन्थ कालिदास, भवभूति, भारवि, माघ, श्रीहर्ष, तुलसीदास, कम्बन आदि महाकवियों के प्रेरणा-स्रोत रहे हैं। **''व्यासोच्छिष्टं जगत्सर्वम्''** ह्नह्नविश्व के समस्त साहित्य के मूल्यवान् विचार व्यास-वाणी में पाये जाते हैंह्नह्नइस कथन से पता चलता है कि व्यासकृत उपर्युक्त ग्रन्थ की

विषय-सामग्री कितनी मूल्यवान् है! महाभारत के अनुसारद्धद्ध''जो-कुछ यहाँ (महाभारत ग्रन्थ में) है, चाहे वह नैतिकता और राजनीति से सम्बन्धित हो, चाहे मानव-कल्याण तथा आध्यात्मिक मोक्ष से, वह अन्यत्र भी पाया जा सकता है। जो यहाँ नहीं है, उसे कहीं भी नहीं पाया जा सकता।''

साधारण हिन्दू जिस धर्म को जानता है और पालन करता है, वह इन महाकाव्यों और पुराणों में ही वर्णित धर्म है। इन्हीं सद्ग्रन्थों ने भारत के राष्ट्रीय चरित्र को आध्यात्मिकता के रंग में रँगा है। भारत का धार्मिक व्यक्ति जिस ईश्वर से प्रार्थना करता है या जिस पर मनन करता है, वह इन्हीं सद्ग्रन्थों का ईश्वर है। भारत का लोकप्रिय धर्म, रूढ़िवादी धार्मिक विशिष्ट वर्ग के लोगों का धर्म, जन-जन का धर्म वही धर्म है जिसका इन ग्रन्थों में प्रतिपादन किया गया है।

भारत के त्यौहार, उत्सव, अनुष्ठान, रीति-रिवाज, प्रथाओं का मूल स्रोत वाल्मीकि और व्यास के ये दोनों ग्रन्थ ही रहे हैं। यह आश्चर्य की बात है कि इसके बावजूद दर्शन के इतिहासकारों ने, यहाँ तक कि कुछ भारतीय इतिहासकारों ने भी, इन सद्ग्रन्थों का अत्यन्त त्रुटिपूर्ण ढंग से मूल्यांकन किया है और कुछ ने तो इनके अस्तित्व तक को नकारा है, मानो धार्मिक साहित्य में वे कूड़ा-करकट के समान हों। वस्तुतः भावात्मक विषाद की स्थिति में हतोत्साहित हो कर धार्मिक जन सदैव-सदैव से इन ग्रन्थों से ही प्रेरणा ग्रहण करके सान्त्वना के अमृत-कण प्राप्त करते रहे हैं।

भारतीय संस्कृति के इन दोनों निर्माताओं की महत्ता को देखते हुए सम्भवतः यह मूल्यांकन भी पर्याप्त नहीं है। आशा है, दार्शनिक और धार्मिक इतिहास के विद्यार्थी इन महाकाव्यों के सागर में पुनः प्रवेश करके इनमें निहित बहुमूल्य विचारों के अन्याधिक मोती ढूँढ़ कर लायेंगे। इन महाकाव्यों के आशय को समझे बिना भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्वों को समझ पाना कठिन है। महाभारत में कहा गया है कि वेद उन व्यक्तियों से भयभीत रहते हैं, जिन्होंने इन महाकाव्यों और पुराणों का अध्ययन नहीं किया है। वेदों में जो सत्य है, उसी को इन महाकाव्यों में प्रस्तुत किया गया है। इस सत्य की अनभिज्ञता से वे (व्यक्ति) इन वेदों पर सचमुच ही मारक प्रहार करेंगे।

(अनूदित)

अपने वास्तविक आनन्द-निकेतन की ओर चलते चलो। संसार के मरुस्थल में काफी भ्रमण कर चुके हो। अब सन्त-रूपी मरुद्यानों में विश्राम करो। यह तो तप्त बालुका है, तृप्तिदायक जल नहीं; भ्रम का परित्याग करो। सन्तों से ज्ञान की प्राप्ति करो। सन्त तुम्हारा उद्धार करेंगे। वे तुम्हें सहायता प्रदान करेंगे। तुम्हारा मार्ग-निर्देशन करेंगे और तुम्हारे लक्ष्य तक साथ-साथ चलेंगे। अन्धा व्यक्ति बिना किसी नेत्रधारी की सहायता से चल नहीं सकता। संसारी लोग शाश्वत सत्य के प्रति अन्धे हैं और केवल अज्ञानान्धकार में अपना मार्ग टटोल रहे हैं। केवल ऋषि और मुनि गण ही तुम्हें सहायता प्रदान कर सकते हैं। उनकी शिक्षाओं का पालन करो। सदाचार का अभ्यास करो। अपने ध्येय को उच्च बनाओ और उचित प्रयत्न करते जाओ।

स्वामी शिवानन्द

बच्चों के लिए दिव्य जीवन :

आध्यात्मिक उपदेश ४

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

आस्तिक और नास्तिक

पत्तू एक नास्तिक है। किन्तू एक आस्तिक है। जो ईश्वर को मानता नहीं, वह नास्तिक कहलाता है। जो ईश्वर को मानता है, वह आस्तिक कहलाता है।

पत्तू ने किन्तू से पूछाह्न''प्यारे किन्तू ! तुम हमेशा ईश्वर की बात करते रहते हो। तुम कीर्तन और जप करते हो। उसे फूल चढ़ाते हो। वह है कहाँ?''

किन्तू ने कहाह्न''पत्तू! वह तो सब जगह है। वह तुम्हारे हृदय में भी है। वह सभी प्राणियों में है।''

पत्तू ने कहाह्न''किन्तू! मुझे अपना ईश्वर दिखाओ।''

किन्तू ने पत्तू को एक छड़ी लगायी और कहाह्न''पत्तू, अपना दर्द दिखाओ तो।''

पत्तू ने जवाब दियाह्न''दर्द दिखाऊँ कैसे? वह तो मैं अनुभव कर रहा हूँ।''

किन्तू ने कहाह्न''ईश्वर भी ऐसा ही है। उसका जप और ध्यान करके अनुभव करना होता है। मैं उसे दिखा नहीं सकता।''

उसी क्षण से पत्तू आस्तिक बन गया।

बोलने के नियम

जबान सँभाल कर बोलो। बोलते समय प्रत्येक शब्द पर ध्यान दो। किसी की बुराई न करो। बढ़ा-चढ़ा कर न बोलो। सत्य और यथार्थ बोलो। वाणी पर बड़ी सावधानी से नियन्त्रण रखो। कम बोलो। नपे-तुले शब्द बोलो। बातूनी मत बनो।

बोलने से पहले सोच लो कि तुम्हारी बात सच्ची, प्रिय और हितकर है या नहीं। यदि न हो, तो मत बोलो। अपने काम से काम रखो। दूसरों के मामलों में दखल न दो।

किसी की बुराई सुनो, तो फिर उसे किसी से न कहो। चतुराई दिखाने की कभी कोशिश न करो। मौन रहने का महत्त्व समझो। बिन-माँगी सलाह न दो। इन नियमों का पालन करोगे, तो सुखी और शान्त रहोगे। लोग तुम्हें चाहेंगे, तुम्हारा सम्मान करेंगे। तुम जीवन में सफल होओगे।

सत्संग

साधु-संन्यासियों, योगियों, महात्माओं, भक्तों आदि की संगति तथा उनसे आध्यात्मिक उपदेश श्रवण करने को सत्संग कहते हैं। सत्संग वह नाव है जो प्राणी को निर्भयता और अमरता-रूपी दूसरे तट पर पहुँचाती है।

सत्संग से अज्ञान का अन्धकार मिटता है और हृदय में सांसारिक विषय-भोगों के प्रति अनासक्ति तथा वैराग्य भर जाता है। सत्संग अज्ञान-रूपी बादलों को तितर-बितर कर देने वाला सूर्य है। उससे दिव्य जीवन जीने की प्रेरणा मिलती है और परमेश्वर के अस्तित्व की धारणा दृढ़ होती है।

धर्मग्रन्थों का अध्ययन अभावात्मक सत्संग है। महात्माओं के दर्शन के लिए जाते समय भक्ति-भाव से कुछ-न-कुछ फल ले कर जाओ। उनसे बहस न करो। शान्त बैठ कर उनका उपदेश सुनो तथा उसे आचरण में लाओ। **(अनुवादक : श्री त्रि. न. आत्रेय)**

बाल-स्तम्भ :

एक-दूसरे से बढ़ कर २

स्वामी रामराज्यम्

(उत्तराखण्ड के एक गाँव में बनी भाई-बहन की दो समाधियों की कहानी सुनाते हुए उसी गाँव के निवासी रामप्रसाद ने बताया कि बदरीनाथ से लौटती हुई एक बस अलकनन्दा नदी में गिर कर दुर्घटनाग्रस्त हो गयी थी। उस बस का एक यात्री राजू दुर्घटना होने के कुछ देर पहले से अचानक मिले गये अपने एक मित्र का साथ देने के लिए उसके साथ ही उसकी मोटरसाइकिल पर बैठ कर उस बस के पीछे-पीछे चल रहा था। बस पर उसकी पत्नी शीला बैठी थी। दुर्घटना के बाद राजू की आँखों के सामने ही शीला नदी के जल में समा गयी। दुःखी राजू नदी में कूद कर प्राण देने के लिए नदी की ओर भागा। तभी उसकी दृष्टि पड़ी तेरह-चौदह वर्ष की बालिका लक्ष्मी पर जो उस दुर्घटना में अपने दादा-दादी को खो कर अपने को नदी के जल में डूबने से बचाने का प्रयास कर रही थी। बालिका की बेबसी को देख कर अपने प्राण दे देने की बात भूल कर राजू लक्ष्मी को बचा कर नदी के तट पर ले आया। लक्ष्मी ने उससे विनती की कि वह उसे उसके घर तक पहुँचा दे। राजू लक्ष्मी के साथ उसके गाँव की ओर चल पड़ा।)

गाँववालों को इस दुर्घटना की कोई खबर नहीं थी। शाम को हम लोगों ने देखा कि लक्ष्मी किसी अजनबी के साथ चली आ रही है। हम सब सोचने लगे कि उसके दादा-दादी कहाँ गये। रोते-रोते लक्ष्मी ने सारा हाल कह सुनाया। राजू ने अपने बारे में बताया कि ऋषिकेश के पास एक गाँव में वह रहता है और वहाँ के प्राइमरी स्कूल में अध्यापक है। पत्नी और बच्ची को खो देने के बाद अब उसके परिवार में कोई नहीं बचा है।

राजू का मन अपनी पत्नी के बिना अपने घर लौटने का नहीं हुआ। लक्ष्मी को भी अपना सूना घर काटने को दौड़ता था। विनती करके लक्ष्मी ने राजू को उस घर में अपने साथ रहने के लिए मना लिया। लक्ष्मी ने दादा-दादी खो कर एक भाई को पा लिया। राजू ने पत्नी खो दी थी, उसे एक बहन मिल गयी।

इतना कह कर रामप्रसाद कुछ देर के लिए चुप हो गया। फिर बोलाह्वसमय मलहम की तरह होता है। उन दोनों के दुःख के घाव भर दिये समय ने। अब राजू लक्ष्मी के दादा के खेत सँभालने लगा। लक्ष्मी घर सँभालती थी। धीरे-धीरे गाँव वाले भूल गये कि लक्ष्मी राजू की सगी बहन नहीं है। लक्ष्मी भी भूल गयी कि राजू उसका सगा भाई नहीं है।

पिछले साल रक्षाबन्धन के त्योहार से दो दिन पहले की बात है। लक्ष्मी राजू के लिए राखी खरीद कर लायी थी। राखी देख कर राजू बोलाह्व'बहुत सुन्दर राखी है।' लक्ष्मी ने कहाह्व'देखो भैया, इसकी डोरी में न जाने कितनी महीन-महीन लड़ियाँ हैं। तुम भी मेरे न जाने कितने जन्मों के भइया हो। हो न?' यह कहते-कहते उसकी आँखें अँसुआ आयी थीं। राजू ने उसकी आँखें पोंछते हुए कहा थाह्व'आगे भी कई

जन्मों में तेरा भइया बनूँगा। समझी?' यह बात राजू ने कभी बाद में रोते-रोते बतायी थी। लेकिन लक्ष्मी नहीं बाँध पायी उस राखी को राजू के हाथ में।

दूसरा दिन बहुत दुःखदायी था। वह दिन आया और पूरे गाँव को रुला गया। रात की ही नहीं, दिन की भी काली छाया होती है। उस दिन की काली छाया कई दिनों तक, कई महीनों तक इस गाँव में मँडराती रही। उस दिन एक बहुत दुःखद घटना घटित हो गयी। इस गाँव के किनारे एक किसान अपने बूढ़े पिता के साथ रहता था। एक दिन जब वह अपने खेतों में गया हुआ था, उसके घर में बिजली के तारों से आग लग गयी। उस समय घर के अन्दर उसका बूढ़ा पिता था। गाँव वाले दौड़े। लक्ष्मी और राजू भी भागे-भागे आये। लक्ष्मी ने चिन्तित हो कर राजू से पूछाह्न'क्या बूढ़ा बापू घर के अन्दर ही है?'

तभी घर के अन्दर से आवाज आयीह्न 'बचाओ, बचाओ।'

'कुछ करना होगा' कहते हुए लक्ष्मी घर के आँगन की दीवार की ओर भागी। वहाँ एक सीढ़ी पड़ी हुई थी। सीढ़ी उसने दीवार से लगायी और राजू से बोलीह्न'भैया, मैं चढ़ कर आँगन में कूदी जाती हूँ। मैं दरवाजा खोल दूँगी। तुम जल्दी से बूढ़े बापू को बाहर निकाल लाना।'

राजू ने दौड़ कर लक्ष्मी का हाथ पकड़ा और बोलाह्न'तू आग में कूदने जा रही है और मैं यों ही खड़ा देखता रहूँगा?'

राजू का हाथ छुड़ा कर लक्ष्मी सीढ़ी से चढ़ गयी। राजू भी पीछे-पीछे चढ़ने लगा। आँगन की दीवार पर चढ़ कर लक्ष्मी ने पीछे मुड़ कर राजू को देखा तो बोलीह्न'भैया, तुम मत आओ। तुम जल्दी से दरवाजे के पास पहुँचो।' फिर भी राजू चढ़ता रहा। हाथ से मना करने का संकेत करते हुए लक्ष्मी विनती के स्वर में बोलीह्न'मेरी बात मानो भैया, मत आओ।' राजू बेमन से सीढ़ी से उतरने लगा। लक्ष्मी आँगन की तरफ देखते हुए चिल्ला कर बोलीह्न'बापू, तुम घबराना नहीं, मैं आ गयी।' यह कह कर वह आँगन में कूद गयी। नीचे उतर कर राजू दौड़ता हुआ दरवाजे के पास पहुँच गया और चिल्ला-चिल्ला कर कहने लगाह्न'लक्ष्मी, जल्दी खोल, जल्दी खोल।' थोड़ी देर बाद लक्ष्मी की चीख सुनायी पड़ी। इसके बाद बापू की एक धीमी आवाज सुनायी पड़ीह्न 'बचाओ, बचाओ।' फिर सब-कुछ शान्त हो गया। राजू के लिए एक-एक पल भारी हो रहा था। घबरा कर वह सीढ़ी की ओर भागा और ऊपर चढ़ने लगा। तभी तेज हवा चलने लगी। घर की छत से उठती हुई आग की लपटें उस पर बरस पड़ीं। वह तुरन्त उतर आया और दरवाजे की ओर भागा। दरवाजा तब तक आग पकड़ चुका था। वह एक लकड़ी से दरवाजे को जोर-जोर से पीटने लगा। अधजले दरवाजे को टूट कर गिरने में ज्यादा देर नहीं लगी। अब सारा दृश्य साफ थाह्नआँगन में खाट पर पड़ा हुआ बापू का अधजला शरीर, उस पर औंधी गिरी पड़ी लक्ष्मी की देह और दो जलती हुई शहतीरें जो छत से टूट कर उन दोनों पर आ गिरी थीं।

तेज हवा के कारण देखते-देखते पूरा घर आग की चपेट में आ गया। गाँववालों ने बड़ी मुश्किल से किसी प्रकार पानी डाल कर आग बुझायी लेकिन तब

तक आग बूढ़े बापू के साथ-साथ लक्ष्मी को भी निगल चुकी थी।

गाँव में आँसुओं की बाढ़ आ गयी। गाँव की औरतें बहुत देर तक लक्ष्मी के शरीर के पास बैठ कर रोती रहीं। और राजू? एक भी आँसू उसकी आँखों से नहीं निकला। वह एक दीवार का सहारा ले कर बैठ गया और फटी-फटी आँखों से आँसुओं की बाढ़ को देखता रहा। फिर एकाएक उठ खड़ा हुआ और बोलाह्वह्व'चलूँ, लक्ष्मी मेरा इन्तजार कर रही होगी।' तभी उसकी दृष्टि लक्ष्मी के शरीर पर पड़ी और वह पछाड़ खा कर गिर पड़ा।

थोड़ी देर के लिए रामप्रसाद चुप हो गया। फिर कहने लगाह्वह्वकुछ दिनों बाद राजू ने लक्ष्मी की स्मृति में समाधि बनवायी। गाँव वालों ने भी इस काम के लिए दिल खोल कर पैसा दिया। रोज शाम को राजू समाधि पर आ कर दीया जलाता था और रात होने तक बैठा रहता था। हँसना तो उसने उसी दिन से छोड़ दिया था, जिस दिन उसकी बहन इस संसार से विदा हुई थी, धीरे-धीरे उसने बोलना भी कम कर दिया।

(क्रमशः)

सूचना :

श्री नवरात्र दुर्गा-पूजा

पवित्र दुर्गा-पूजा (नवरात्र देवी-पूजा) शिवानन्द आश्रम, शिवानन्दनगर में **८ से १६ अक्तूबर २०१०** तक मनायी जायेगी। गत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी यह पूजा समयोचित शालीनता एवं समारोह के साथ सम्पन्न होगी। देवी माँ की नवरात्र पूजा के कार्यक्रम में शास्त्रीय पूजा, स्वाध्याय एवं देवीमाहात्म्य (दुर्गासप्तशती), ललितासहस्रनाम तथा देवी से सम्बन्धित अन्य ग्रन्थों का पाठ, सामूहिक प्रार्थना, नित्य कीर्तन, भजन, प्रवचन आदि सम्मिलित होंगे। देवी माँ की वेदी को नित्य ही अलंकारों एवं पुष्पों से सजाने तथा प्रकाश की व्यवस्था होगी। विजयादशमी के पूर्व-दिवस **१६ अक्तूबर २०१०** को परम पवित्र चण्डी-हवन (होम), कुमारी-पूजा तथा समापन-पूजा उत्सव का परमोत्कृष्ट रूप लेंगे। **१७ अक्तूबर २०१०** को पवित्र विजयादशमी मनायी जायेगी।

हम सभी भक्तों को इस पवित्र पूजा में उपस्थित एवं सम्मिलित होने का हार्दिक निमन्त्रण देते हैं। अपने आगमन की पूर्व-सूचना देने की कृपा करें। जो भक्त गण **'व्यवस्थापक, श्री विश्वनाथ मन्दिर, पत्रालय : शिवानन्दनगर २४९ १९२, जिला : टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखंड'** को पत्र द्वारा अपनी इच्छा व्यक्त करेंगे, उनके नाम से विशेष संकल्प के साथ पूजा की जायेगी।

आप सभी पर जगन्माता माँ की कृपा रहे!

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

मुख्यालय आश्रम में श्री गुरुपूर्णिमा महोत्सव

अपने गुरु के परम पावन चरण-कमलों में श्रद्धा और भक्ति की भावना का पुनः-पुनः नवीनीकरण करने एवं उसे दृढ़तम करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष आषाढ़ की पूर्णिमा का दिवस, गुरुपूर्णिमा के रूप में मनाया जाता है। सदा की भाँति इस वर्ष भी मुख्यालय आश्रम में यह पावन उत्सव अत्यन्त श्रद्धापूर्वक २५ जुलाई २०१० को मनाया गया।

इस शुभ दिवस पर विभिन्न देशों से भक्त जन माँ गंगा के पावन तट पर स्थित मुख्यालय आश्रम में एकत्रित हुए। उत्सव के लिए निर्धारित स्थान, स्वामी शिवानन्द सत्संग भवन (ऑडिटोरियम) में परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज, परम आराध्य गुरुमहाराज श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज तथा परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज के विशाल चित्रों की भाँति-भाँति के पुष्प-गुच्छों से मनोरम सज्जा की गयी थी। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रातःकालीन ध्यान एवं प्रार्थना के लिए ४.३० पर हुआ। दिव्य जीवन संघ के उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज ने अपने उद्‌बोधन द्वारा भक्तों को प्रेरणा देते हुए कहा कि वे गुरुदेव की शाश्वत दिव्य उपस्थिति का अनुभव करें तथा अपने भीतर सच्ची गुरु-भक्ति की पुनर्स्थापना करें। श्री स्वामी आत्मस्वरूपानन्द जी महाराज ने गुरु-कृपा के सम्बन्ध में अपने विचार प्रस्तुत किये। इसके उपरान्त प्रभु-नाम-संकीर्तन सहित प्रभातफेरी हुई। विश्व-शान्ति तथा सर्व कल्याण मंगल के लिए यज्ञशाला में विशेष हवन किया गया।

पूर्वाह्न सत्र में, समाधि मन्दिर में गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की विशेष पूजा की गयी तथा सत्संग भवन में, विशाल भक्त जन समूह की उपस्थिति में वरिष्ठ सन्त-महात्माओं द्वारा गुरुदेव की पावन पादुकाओं की भव्य पूजा एवं अभिषेक-अर्चना की गयी। समस्त वातावरण दिव्य तरंगों से झंकृत हो उठा। पादुका-पूजा के उपरान्त दिव्य जीवन संघ के महासचिव, परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने व्यास भगवान् का आह्वान करते हुए ब्रह्मसूत्र के प्रथम चार सूत्र पढ़े। इस पावन महोत्सव के उपलक्ष्य में ७ डीवीडी तथा हिन्दी, अँगरेजी, तमिल एवं गुजराती भाषा की कुछ पुस्तकों का विमोचन भी किया गया। दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के परमाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी विमलानन्द जी महाराज के आशीर्वचनों के उपरान्त पूर्वाह्न सत्र समाप्त हुआ।

अपराह्न सत्र में, श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज, स्वामी त्यागानन्द माता जी तथा अन्य भक्तों ने सद्‌गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के जीवन-चरित्र एवं उपदेशों पर प्रवचन दिये। सायंकालीन सत्संग में नियमित पाठ एवं प्रार्थनाओं के अतिरिक्त श्री हरि कृष्ण शाह जी द्वारा अत्यन्त मधुर एवं आत्मोत्थापक सितार-वादन प्रस्तुत किया गया।

व्यास भगवान्, सद्‌गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज, परम श्रद्धेय श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज एवं अन्य ब्रह्मविद्या-गुरुओं के आशीर्वाद आप सबको परम आनन्द के उच्चतर शिखर तक पहुँचा देने की कृपा करें!

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

'शिवानन्द होम' द्वारा सेवा

''शिवानन्द होम सड़क के किनारे निराधार तथा मरणासन्न स्थिति में पाये जाने वाले और जिनकी देखरेख रखने वाला कोई नहीं होता, ऐसे लोगों को चिकित्सीय सुविधा तथा प्रेमपूर्ण देखभाल की प्राप्ति कराता है'' (स्वामी चिदानन्द)। पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज ने इस सेवा को, स्वयं आरम्भित कर, अपने बेजोड़, एकनिष्ठ तथा अनुपम प्रेम को कार्य में मूर्तिमन्त परिणत करते हुए एक ज्वलन्त और प्रत्यक्ष मिसाल दी है।

'शिवानन्द होम' में इस माहावधि में नये मरीज़ भर्ती किये गये। उनमें से एक मरीज़ सड़क के किनारे पड़ा था जो उठने में या बैठने में अथवा चलने में असमर्थ था। उसने बताया कि कई महीनों से बीमार था और उसकी स्थिति दिन-प्रतिदिन खराब हुई। वह एक विचरता साधु था जिसने अनेक वर्षों से घर-बार छोड़ दिया था। प्रभुकृपा की प्रतीक्षा में, यह भी न जानते हुए कि अगले दिन वह जीवित रहेगा कि नहीं, वह केवल लेटा था। और हाँ, करुणा मानव-रूप में अवतरित हुई, प्रेम ने उसकी ओर कदम बढ़ाये तथा आशा ने उसका मन भर दिया। उसकी हालत देख कर, जिनके मन अत्यन्त दया से द्रवित हुए ऐसे मैत्री-भाव से भरे दो पथिकों द्वारा उसे 'होम' में लाया गया। कई जाँच-परीक्षण पश्चात् उसे मधुमेह, क्षय, एक फुफ्फुस की नष्टता तथा उसके कारण श्वासोच्छ्वास की तीव्र कठिनाई से पीड़ित पाया गया। उस समय से उसके उपचार प्रारम्भ किये गये हैं। औषधियाँ और उचित आहार से उसकी स्थिति क्रमशः सुधर रही है, और अद्याप भी नियमित रूप से उसका परीक्षण होता है। ॐ श्री करुणादयाय नमः।

'होम' में नूतन भर्ती हुए मरीज़ों में, एक और मरीज़ लगभग ८५ वर्ष का सद्गृहस्थ है। किसी-न-किसी कारण से कोलकाता का अपना घर छोड़ने को लाचार हो कर सम्पूर्ण एकाकी प्रवास करते-करते वह अपना मार्ग भूल गया। वह ऋषिकेश में, 'मुनिकीरेती' विस्तार में पुलिस स्टेशन के पास पहुँच गया। वहाँ के एक कॉन्स्टेबल उसे भर्ती करने की विनंती सहित 'शिवानन्द होम' में लाये। मिलनसार, सन्तुष्ट और प्रसन्न व्यक्तित्व का, किन्तु वृद्धावस्था और उससे संलग्न कठिनाइयों के कारण वह अपने नित्यकर्म करने में पूर्णतया असमर्थ था।

तथापि माह की पराकाष्ठा तो निश्चित ही पंचकुला से आये साठ से अधिक बालकों की 'होम' की मुलाकात थी। गुरुदेव के आश्रम में उनके आवास की अवधि में समय निकाल कर वे रुचि और उत्साह से 'होम' के अन्तेवासियों तथा मरीज़ों को मिलने आये। अन्त में, अत्यन्त महत्त्वपूर्ण बात थी कि 'होम' के प्रत्येक वॉर्ड (विभाग) में जा कर उन्होंने हरेक मरीज़ के स्वास्थ्य, कल्याण और मनःशान्ति के लिए प्रार्थना की। ये आनन्द, शुचिता और सच्चाई स्तुत्य हैं। हममें से प्रत्येक को शान्ति, सुख और सन्तोष सदैव प्राप्त हों! ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः !

''भूखे को भोजन दें! नग्न को वस्त्र दें! रोगियों की सेवा करें! यही दिव्य जीवन है।'' **स्वामी शिवानन्द**

मुख्यालय आश्रम में बालकों का शिविर

''विश्व की भावि आशा, बालकों को, दिव्य जीवन यापन करने की प्रेरणा तथा तालीम देनी आवश्यक है।'' परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की इस महान् उक्ति का अनुसरण करते हुए, वर्ष २०१०, माह जून के दिनांक १२ से दिनांक १९ जून पर्यन्त, आश्रम मुख्यालय में बालकों के लिए एक शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में प्रतिभागी होने के लिए, 'आशियाना' (भारत में सामाजिक स्वास्थ्य हेतु कार्यरत संस्था), पंचकुला, चण्डीगढ़ से, दो टुकड़ियों में ५६ बालकों ने, उनके शिक्षकों के साथ आश्रम की मुलाकात ली। श्रीमती विभा जी और श्री चन्द्रमोहन जी, इस शिविर में मददकर्ता थे।

इस शिविर की गतिविधियों की रूपरेखा विशेष रूप से बनायी गयी जिससे बालकों आश्रम-जीवन की झलक देख सकें और 'नैतिक तथा आध्यात्मिक शिक्षा उन्हें प्रदान की जायें। बालकों ने सब गतिविधियों में सोत्साह भाग लिया। गंगा-स्नान, श्री समाधि मन्दिर में भजन-कीर्तन, श्री श्री विश्वनाथ मन्दिर की आरती और 'शिवानन्द होम' की समर्पित भाव से सम्पन्न हो रही सेवा ने उन्हें सर्वाधिक प्रभावित किया। वे आश्रम के स्वच्छ, प्रेमपूर्ण और सुखद वातावरण से भी अभिभूत हुए। इस शिविर में प्रतिभागी हो कर बालकों ने स्वयं को अति सौभाग्यशाली समझा।

उन सब पर सर्वशक्तिमान् प्रभु की कृपा हो!

व्यक्ति में कितनी विद्वत्ता, बुद्धि और विवेक हैह्वह्वइसका निर्णय उसके व्यवहार से होता है। यदि व्यक्ति इनका सदुपयोग नहीं करता, तो इनकी उपलब्धि व्यर्थ ही है। शुद्ध विचारों के सम्मुख मलिन विचारों के आत्म-समर्पण करने पर ही व्यक्ति का जीवन दिव्य बनता है। **स्वामी चिदानन्द**

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के प्रतिवेदन

आगरा (उत्तर प्रदेश): शाखा के साप्ताहिक सत्संग प्रति रविवार को, हवन तथा श्री हनुमान जी के स्तोत्रपाठ तथा दैनिक योगासन-वर्ग के आधिक्य में, शाखा द्वारा दिनांक १३ अप्रैल को प्रवचन तथा दिनांक २३ मई से निःशुल्क मिनरल जल-कुटीर भी आयोजित हुए।

अहिवारा (छत्तीसगढ़): शाखा की, माह जून २०१० में, सम्पन्नता में, दैनिक सत्संग, प्रति एकादशी को महामृत्युंजय मन्त्र का सामूहिक जप तथा परम पूज्य श्री स्वामी देवानन्द जी महाराज के जन्मदिन पर विशेष सत्संग आदि समाविष्ट हैं।

बेंगलूरू (कर्नाटक) : शाखा की नियमित गतिविधियाँ निम्नानुसार थींह्वह्वपादुका पूजा, गुरुदेव की पुस्तकों का स्वाध्याय, आरती और मिठाइयों का वितरणह्वह्वसाप्ताहिक सत्संगों में; देवी-पूजा, श्री ललिता सहस्रनाम स्तोत्र-पाठ तथा श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्रपाठ तथा भजन प्रति शुक्रवार को; प्रति रविवार को अभिषेकम्, गुरुदेव के पुस्तकों का स्वाध्याय, ज्ञान-प्रसाद का और महाप्रसाद का वितरण प्रथम रविवार को, ३ घण्टोंपर्यन्त अखण्ड जप तृतीय रविवार को तथा भजन और स्वाध्याय चतुर्थ रविवार को।

बरबिल् (उड़ीसा): शाखा के द्विवार साप्ताहिक सत्संगों में गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग तथा प्रत्येक सोमवार को, विशिष्ट भक्तों के नाम से साप्ताहिक सत्संग आश्रम परिसर में परिचालित होते हैं। प्रातः पादुका-पूजा, सायंकाल को सत्संगह्वह्वइन कार्यक्रमों युक्त, 'चिदानन्द-दिन' को 'साधना-दिन' मनाया जाता है। गत दो माहावधि में, स्वामी शिवानन्द चैरिटेबल होम्योपैथिक औषधालय ने ८६५ मरीजों के इलाज किये।

बल्लारि (कर्नाटक): दैनिक पूजा के अतिरिक्त, शाखा ने प्रति रविवार को पादुका पूजा सहित साप्ताहिक सत्संग सम्पन्न किये।

भिलाई (छत्तीसगढ़): शाखा के मासिक सत्संग पादुका पूजन, भजन-कीर्तन, भोग-आरती के साथ दिनांक २३ मई को और दिनांक १३ जून को, प्रति मंगलवार को भजन-कीर्तन तथा श्री हनुमान चालीसा, श्री ललिता सहस्रनाम प्रति शुक्रवार को, श्री विष्णु सहस्रनाम तथा गीता-पाठ प्रति एकादशी को इस प्रकार मातृसत्संग नियमित चलते रहे।

भोंगीर (आन्ध्र प्रदेश): शाखा निम्नानुसार गतिविधियाँ परिचालित करती हैह्वह्वश्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र-पारायण सहित श्री कन्यका परमेश्वरी मन्दिर, टागोर रोड, तथा पूजा, आरती सहित श्री मुरली कृष्ण मन्दिर, विद्यानगर में दैनिक सत्संग। तदुपरान्त परम पूज्य श्री स्वामी देवानन्द जी महाराज के जन्मदिन पर एक विशेष सत्संग आयोजित हुआ।

बीकानेर (राजस्थान): शाखा की नियमित गतिविधियाँह्वह्व(१) महामृत्युंजय मन्दिर में दैनिक द्विवार पूजा तथा विशेष प्रदोष-पूजा, (२) प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग, (३) मातृसत्संग, (४) 'शिवानन्द-दिन' को पादुका पूजा, (५) 'चिदानन्द-दिन' को हवन। शाखा की विशेष गतिविधियाँह्वह्वश्री परशुराम जयन्ती, श्री शंकराचार्य जयन्ती, श्री बुद्ध जयन्ती, गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज का वार्षिक संन्यास-दिन तथा निर्जला एकादशी

को विशेष कार्यक्रम। दैनिक योगासन-वर्ग, अकिंचन छात्रों को शिष्यवृत्ति, शिवानन्द पुस्तकालय द्वारा सामाजिक सेवा, (६) पावन पुरुषोत्तम मास में रामचरित मानस का मासिक पारायण। शाखा द्वारा सम्पन्न समाजसेवा : योगासन-वर्ग, निर्धन छात्रों को शिष्यवृत्तियाँ, शिवानन्द लाइब्रेरी, सत्संग तथा झोंपड़ी-निवासियों के निर्धन छात्रों को सांस्कृतिक तालीम।

बिलासपुर (छत्तीसगढ़): शाखा द्वारा नियमित सत्संग तथा पादुका पूजा सम्पन्न होते रहे। शाखा ने आदरणीय श्री स्वामी शिवानन्द गुरुसेवानन्द जी का षोडशी-उत्सव आयोजित करके निर्धनों को अन्नदान तथा भक्तों को प्रसाद-वितरण किया गया।

बुगुडा (उड़ीसा): शाखा ने शिवानन्द आश्रम में साप्ताहिक सत्संग, संक्रान्ति दिनों को विशेष सत्संग तथा भक्तों के निवासस्थानों पर साप्ताहिक सत्संगों के पूर्व, फरवरी के दिनांक १० से १६ पर्यन्त भागवत-पारायण-सप्ताह का आयोजन, दिनांक ४ जनवरी को आदरणीय श्री स्वामी वैकुण्ठानन्द जी और आदरणीय श्री स्वामी देवभक्तानन्द जी की शाखा की मुलाकात पर विशेष सत्संग तथा शाखा के स्थापना-दिन, दिनांक २७ जनवरी को विशेष आध्यात्मिक कार्यक्रम सम्पन्न किये।

दिगपहंडी (उड़ीसा): शाखा द्वारा, गुरुदेव की पुस्तकों के स्वाध्याय सहित प्रति रविवार और गुरुवार को द्विवार साप्ताहिक सत्संग, दिनांक २७ मई को चल-सत्संग, दिनांक ३० मई को साधना-दिन तथा पादुका पूजा के साथ 'शिवानन्द-दिन', 'चिदानन्द-दिन' आदि गतिविधियाँ परिचालित की गयीं।

फरीदपुर (उत्तर प्रदेश): शाखा ने सफलतापूर्वक साप्ताहिक सत्संग प्रति बुधवार को, प्रति पूर्णिमा को श्री राम चरित मानस सहित हवन, रेलवे स्टेशन पर पीने के जल के पैकेटों का वितरण तथा प्रति एकादशी को पूर्ण दिनावधि में शर्बतों का वितरण आदि सम्पन्न किये।

काकिनाडा, माधवपट्टनम् (आन्ध्र प्रदेश): शाखा की नियमित गतिविधियों में प्रति रविवार को तथा प्रति मंगलवार को दो भिन्न स्थानों में सत्संग तथा प्रति शुक्रवार को श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र का पारायण तथा तृतीय केन्द्र पर श्री लक्ष्मी अष्टोत्तरशत नामावली पूर्ण करने के अतिरिक्त, दिनांक १८ मई को आदरणीय श्री स्वामी हंसानन्द जी के जन्मदिन पर तथा दिनांक २२ जून को परम पूज्य श्री स्वामी देवानन्द जी के जन्मदिन पर विशेष सत्संग का आयोजन तथा दिनांक ६ और २० जून को होमियोपैथी के दो निःशुल्क मेडिकल कैम्प का आयोजन भी किया गया।

कंटाबाझी (उड़ीसा): दिनांक ६, १३ तथा २० जून को शाखा ने पूजा और गीता के स्वाध्याय सहित सत्संग आयोजित किये।

खातिगुडा (उड़ीसा): शाखा की नियमित गतिविधियाँ : दैनिक द्विवार पूजाएँ, प्रति गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग, श्री विष्णु सहस्रनाम स्तोत्र पारायण सहित एकादशी सत्संग। दिनांक ९ मई को एक चल-सत्संग, दिनांक २ मई को तथा ६ जून को ११ घण्टोंपर्यन्त अखण्ड महामन्त्र-कीर्तन और नारायण-सेवा आदि विशेष गतिविधियाँ थीं।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़): दैनिक दो घण्टों की ब्राह्ममुहूर्त सभा, दैनिक सांध्य सत्संग, प्रति गुरुवार को साप्ताहिक चल-सत्संग, प्रति शनिवार को मातृसत्संग

तथा प्रति एकादशी के सत्संग के नियमित गतिविधियों के आधिक्य में स्वामी शिवानन्द भजन मन्दिर में, इस शाखा, अहिवारा, भिलाई के ५० प्रतिभागियोंयुक्त, निवासीय युवा-कैम्प दिनांक २ से ८ मई पर्यन्त; दिनांक २० जून को हवन और दिनांक २२ जून को परम पूज्य श्री स्वामी देवानन्द जी का जन्मदिन-उत्सव आदि शाखा की विशेष गतिविधियाँ थीं।

नई दिल्ली, वसन्त विहार : शाखा ने प्रति रविवार को नियमित रूप से सम्पन्न किये साप्ताहिक सत्संगों मेंह्लप्रथम रविवार को सुन्दरकाण्ड पारायण, ध्यान, भण्डारा-प्रसाद द्वितीय रविवार को, गुरुदेव की पुस्तकों का स्वाध्याय और 'साधना' पुस्तक पर प्रश्नोत्तरी तृतीय रविवार को तथा एक सन्त द्वारा प्रवचन चतुर्थ रविवार को एवं मई के माह में पंचम रविवार को सत्संग तथा भण्डारा-प्रसाद समाविष्ट थे।

फुलबानी (उड़ीसा): शाखा ने दैनिक द्विवार पूजाएँ, प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग तथा 'शिवानन्द-दिन', 'चिदानन्द-दिन' को पादुका पूजा के अतिरिक्त दिनांक १७ जून से दिनांक २५ जून पर्यन्त 'श्री रामचरित मानस' का नवाह्न-पारायण और प्रवचन आयोजित किये गये।

सालेपुर (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँ : दैनिक पूजा; प्रभात में स्तोत्र-पाठ और ध्यान; योगासन, स्वाध्याय, सत्संग सायंकाल में, प्रथम रविवार को श्रीमद्भगवद्गीता-पारायण, द्वितीय रविवार को योगासन-प्राणायाम-ध्यान, तृतीय रविवार को साधना-दिन तथा चतुर्थ रविवार को विशेष सत्संग, दिनांक ३० मईह्लपंचम रविवार को महामन्त्र का अखण्ड जप तथा अन्तिम शनिवार को श्री सुन्दरकाण्ड पारायण।

माह की विशेष गतिविधि में, श्री शंकराचार्य जयन्ती मनायी गयी।

विशाखपट्टनम् (आन्ध्र प्रदेश): सायंकाल में, दैनिक डेढ़ घण्टे के भजन के आधिक्य में, शाखा के साप्ताहिक सत्संग प्रति रविवार को आयोजित हुए। दैनिक प्रभातीय योगासन-वर्ग तथा प्रति रविवार को निःशुल्क मेडिकल चेक-अप (परीक्षण)ह्लये भी अन्य नियमित गतिविधियाँ थीं। नूतन निर्मित स्वामी चिदानन्द योग-हॉल का उद्घाटन दिनांक ३ अप्रैल को हुआ तथा दिनांक ६ जून को भूमि-पूजा के पश्चात् दिनांक ७ जून को श्री विश्वनाथ-मन्दिर के निर्माण-कार्य का आरम्भ हुआ।

साउथ बलण्डा (उड़ीसा): शाखा ने निज, निम्नानुसार नियमित गतिविधियाँह्लदैनिक द्विवार पूजा, प्रति शुक्रवार को साप्ताहिक सत्संग, प्रति बुधवार को २ घण्टों का संकीर्तन, प्रति रविवार को 'चिदानन्द बाल-विकास कार्यक्रम', 'शिवानन्द-दिन' तथा 'चिदानन्द-दिन' को प्रभात तथा सायंकाल के भिन्न विशेष आध्यात्मिक कार्यक्रमह्लसुचारु रूप से सम्पन्न कर के, दिनांक २७ जून के मासिक ३ घण्टों के महामन्त्र के अखण्ड संकीर्तन में १२५ प्रतिभागियों को प्राप्त करके प्रसाद-सेवन भी सम्पन्न किया।

सुनाबेडा (उड़ीसा): शाखा ने हमारे गुरु की पुस्तकों के स्वाध्याय सहित, प्रति गुरुवार तथा प्रति रविवार को सत्संग सम्पन्न किये। वृन्दावन के एक सन्तश्री ने स्थानिक आश्रम की मुलाकात ले कर प्रवचन दिये।

वाराणसी (उत्तर प्रदेश): शाखा ने दिनांक १३ तथा दिनांक २० को सत्संग पूर्ण किये। □

पावन-स्मृति में

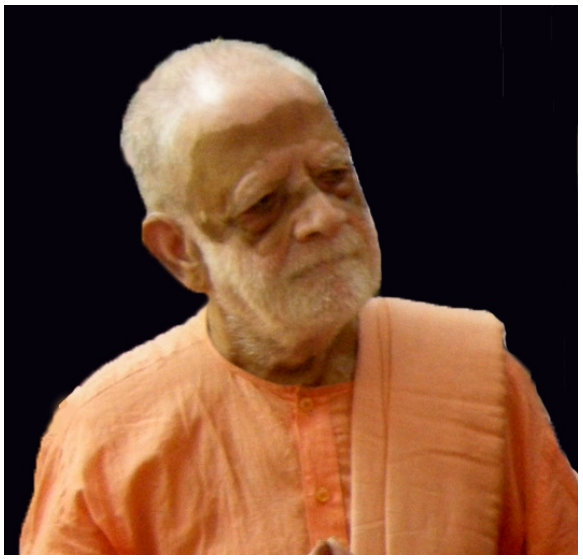

महान् हानि तथा गहन दुःख की अनुभूति के साथ हम सूचित कर रहे हैं कि वर्ष २०१०, माह जुलाई के दिनांक ४ को मध्याह्न १२-०० के समय पर श्री स्वामी शरवणभवानन्द जी महाराज ने अन्तिम प्रयाण किया और वे अस्तित्व के उच्चतर स्तर-क्षेत्र की ओर गतिमान हुए। अन्तिम यात्रा के और दिनांक ४, ५, जुलाई, २०१० को सम्पन्न श्रद्धांजलि सभाओं के हृदय विदारक दृश्य, इन स्वामी जी की महानता के आखिरी साक्ष्य हैं।

वर्ष १९२३ के माह जून के दिनांक १७ को उनका जन्म ऊटि, तमिलनाडु में हुआ। उनका पूर्वाश्रम का नाम ए. पी. वेंकटाचलपति था। बाल्यावस्था से ही उन्हें दृढ़ आध्यात्मिक अभिरुचि थी। बाल्यकाल में उनका समय श्री रामचन्द्र भगवान् की मूर्ति के साथ बालसुलभ खेल खेलने और चेष्टाओं में, स्तोत्र-पाठ में एवं अकिंचन बालकों को पढ़ाने में व्यतीत हुआ। प्रथम, पंचयप्पा स्कूल में, तद्पश्चात् उच्चतर पढ़ाई हेतु, चेन्नै की लॉयला कॉलेज में गये। आध्यात्मिक क्षेत्र में विकसित आत्मा होने से प्रत्येक के सुख-दुःख की वे समानुभूति करते। वे प्रायः स्कूल-छात्रों को पुस्तकों तथा खाद्य-पदार्थों का एवं स्कूल के आसपास के भिक्षुओं को भोजन का वितरण करते।

उन्होंने बंगलूरू के अकाउन्टेन्ट जनरल के ऑफिस में अकाउन्टेन्ट के पद से व्यवसाय स्वीकार किया तथा ५५ वर्ष की आयुह्नउनके निवृत्ति-काल पर्यन्त वहाँ निज सेवाएँ अर्पित कीं।

वर्ष १९५६ में वे 'दिव्य जीवन संघ' से संलग्न हुए और वर्ष १९५९ में श्री गुरुदेव से उन्होंने मन्त्रदीक्षा प्राप्त की। श्री गुरुदेव की पाद-पूजा का विशेषाधिकार भी उन्हें उपलब्ध हुआ। उन्होंने बंगलूरू के वास्तव्य में एवं तद्पश्चात् पट्टामडाई में 'दिव्य जीवन संघ' की उद्देश्य-पूर्ति हेतु अविरत उत्कृष्ट सेवार्पण करते-करते एक महान् कर्मयोगी प्रतिष्ठा सम्पन्न की। भगवान् मुरुगा के वे महान् भक्त थे तथा भगवान् मुरुगा की आराधना में पर्याप्त समय अर्पण करते थे।

उन्होंने बंगलूरू के स्व-निवास स्थान में, परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के लिए एक छोटी कुटीर बनवायी थी और जब भी पूज्य स्वामी जी महाराज बंगलूरू की मुलाकात लेते, वे श्री वेंकटाचलपति के निवासस्थान में रहते। उनकी संन्यास-दीक्षा वर्ष १९९४ में सम्पन्न हुई। परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज ने उन्हें पट्टामडाई में, निज सेवार्पण की विनंती की।

श्री स्वामी जी ने १९९४ के वर्ष से अस्पताल में विविध क्षमतापूर्ण न्यासी, वित्त-नियन्त्रक, प्रबन्ध-न्यासी तथा प्रधान प्रशासक जैसे पदों पर रह कर सेवा प्रदान की। अस्पताल में सेवा-प्रदान-काल में, 'पट्टामडाये कुरल' (Voice of Pattamadai) की तमिल मासिक पत्रिका का प्रकाशन करके एवं पट्टामडाई ग्राम के तथा उसके आसपास के जनसमूह के लाभार्थ 'साधना-सप्ताह' का परिचालन करके, आध्यात्मिक साहित्य के प्रसार के श्री गुरुदेव के मिशन के प्रोत्साहन हेतु भी अथक कार्य किया। उस विस्तार में कुछ शाखाएँ भी प्रस्थापित करने का उनको श्रेय मिलता है। इन

शाखाओं में उनका आर्थिक सहयोग महत्त्वपूर्ण रहा तथा अस्पताल एवं इन शाखाओं में उन्होंने व्यक्तिगत अभिरुचि प्रदर्शित की।

स्वामी जी का प्रसन्न स्वभाव तथा हरेक को स्नेहमय देखरेख का प्रदानह्वह्वइन विशेषताओं ने उन्हें दुःखी आत्माओं के लिए पथदर्शक और विश्वसनीय परामर्शदाता के सम्माननीय पदों पर बैठाये। उनकी महासमाधि से अस्पताल का सम्पूर्ण स्टाफ (कर्मचारी गण) तथा समीपवर्ती ग्रामों के लोगों ने एक शून्यावकाश की अनुभूति की जो श्री स्वामी जी के अन्तिम प्रस्थान तथा उत्तरवर्ती श्रद्धांजलि-सभाओं में उन्हें गम्भीर तथा हार्दिक गहनता से, भक्तों द्वारा अर्पित श्रद्धासुमनों से प्रतीत हुआ।

श्री स्वामी जी ने पार्थिव देह का त्याग किया तथापि अकिंचन और ग्रामीण जनों के कि जिनकी उन्होंने स्नेहपूर्ण सेवा की तथा अस्पताल स्टाफ के मन में उसकी याद सदैव अंकित और ताजी रहेगी।

प्रभु उनकी आत्मा को परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के परम पावन चरणों में विश्राम दे!

हरिः ॐ तत्सत्। जय गुरुदेव!

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

भारतीय विद्याभवन की निबन्ध प्रतियोगिता २००९ के परिणाम

पाठकों की जानकारी के लिए सूचित किया जा रहा है कि भारतीय विद्याभवन द्वारा वर्ष २००९ में आयोजित किये गये 'स्वामी शिवानन्द मेमोरियल ऐस्से कॉम्पिटीशन'(स्वामी शिवानन्द स्मारक निबन्ध प्रतियोगिता) में निम्नांकित प्रतिभागी पारितोषिक विजयी घोषित किये गये हैं। विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं :

श्री मुकेश सिंह
एस.टी.सी. (दुब्बी)
श्री महावीरजीह्वह्व३२२ २२० . . . . . प्रथम पुरस्कार विजेता
झीके, करौली, राजस्थान

श्री अंकुर श्रीमाली
हमलोग कोऑपरेटिव हाउसिंग सोसायटी
बिल्डिंग नं. ७५, 'ए' विंग. . . . . द्वितीय पुरस्कार विजेता
१०२, तिलक नगर, चेम्बूर
मुम्बईह्वह्व४०० ०८९

श्री गोविन्द उपाध्याय
फ्लैट नं. ४, फर्स्ट फ्लोर
त्रिभुवन सोसायटी, रामबाग, लेन नं. ४. . . . . तृतीय पुरस्कार विजेता
समीप गणेश मन्दिर
कल्याण (वेस्ट)ह्वह्व४२९ ३०९

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

अतिथियों तथा अभ्यागतों के लिए आवश्यक सूचना

शिवानन्द आश्रम, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय, ऋषिकेश में अतिथियों एवं अभ्यागतों-आगन्तुकों के स्वागतार्थ वर्तमान समय की माँग तथा सरकारी एजेंसियों की अपेक्षाओं-आदेशों के अनुसार हम कुछ नियमों-शर्तों के परिपालन के लिए बाध्य हैं।

शिवानन्द आश्रम मूलतः संन्यास आश्रम/एक आध्यात्मिक संस्था है, जहाँ के अन्तेवासी संन्यासी, ब्रह्मचारी और आध्यात्मिक साधना में रत साधक हैं। वे निष्काम सेवा करते हैं और दिनानुदिन के कार्यक्रमों में सामूहिक रूप से सम्मिलित हो कर तथा अपनी आध्यात्मिक साधना की तरंगों से तरंगित वातावरण का तथा आश्रम की पवित्रता को बनाये रखने में प्रयत्नशील रहते हैं।

आश्रम में कुछ समय ठहरने वाले अतिथियों एवं अभ्यागतों से आशा की जाती है कि वे आश्रम के आध्यात्मिक वातावरण के अनुकूल ही अपनी आश्रमवास-अवधि का आध्यात्मीकरण करें। पर्यटकों, सप्ताहान्त छुट्टी मनाने वालों तथा मात्र मौजमस्ती करने वालों को आश्रम में ठहरने की सुविधा प्राप्त करने की प्रत्याशा नहीं रखनी चाहिए। वे किसी अन्य स्थान पर ठहरें और आश्रम-दर्शनार्थ तथा प्रार्थना, ध्यान तथा योग आदि के लिए ही आश्रम में आयें।

अतिथियों तथा अभ्यागतों के लिए दिशा-निर्देशन

(१) अतिथियों तथा अभ्यागतों को आश्रम में ठहरने की पूर्व-अनुमति प्राप्त करने के लिए महासचिव को पत्र, ई-मेल आदि के द्वारा पर्याप्त समय पूर्व अग्रिम सूचना देनी होगी, ताकि वे रवाना होने से पूर्व ही अनुमति-पत्र प्राप्त कर सकें। आश्रम-वास की अनुमति-प्राप्ति के लिए आवेदन-पत्र का प्रारूप निम्नलिखित अनुसार होगा :

१. पूरा नाम

२. लिंग और आयु

३. राष्ट्रीयता

४. निवास-स्थान/घर का पूरा पता

५. ई-मेल का पता

६. कोड सहित टेलीफोन/सैल नम्बर

७. पासपोर्ट/फोटो आइडी टाइप और नम्बर*

८. आपके परिचित आश्रमवासी का नाम/सम्बन्ध

९. व्यवसाय-नौकरीपेशा तथा संक्षिप्त आध्यात्मिक पृष्ठभूमिका

१०. क्या आप दिव्य जीवन संघ से सम्बद्ध हैं? तो किस रूप में, कैसे?

११. आगमन का उद्देश्य

१२. आपके साथ आने वालों की संख्या (उनके नाम, लिंग और आयु उल्लेख सहित)

१३. आगमन की तिथि-तारीख

१४. प्रस्थान की तिथि-तारीख

(२) आश्रम-आवास के लिए फोन पर अनुमति लेना मान्य नहीं होगा।

(३) अतिथियों तथा अभ्यागतों को स्वागत-कार्यालय द्वारा जो आवास-स्थान दिया जायह्वह्वपूर्ण सहयोग सहित उसके साथ उन्हें एडजस्ट करना होगा।

(४) आश्रम-वास करते हुए अतिथियों तथा अभ्यागतों को आश्रम के समस्त कार्यक्रमों में उपस्थित रहना होगा; विशेष रूप से प्रातः ध्यान-कक्षा में और रात्रि-सत्संग में।

(५) अतिथियों-अभ्यागतों को अपने मूल्यवान् सामान का ध्यान स्वयमेव रखना होगा। किसी भी प्रकार की हानि-नुकसान के लिए आश्रम-प्रबन्धन उत्तरदायी नहीं होगा।

(६) स्वागत-कार्यालय का नियत कार्य-समय प्रातः ६ बजे से रात्रि १० बजे तक है। रात्रि १० बजे से प्रातः ६ बजे तक कार्यालय बन्द रहेगा। अतः अतिथियों-अभ्यागतों से अनुरोध है

* स्वागत-कार्यालय (Reception Office) में पहुँचने पर आपको पासपोर्ट अथवा कोई फोटो पहचान-पत्र अवश्यमेव प्रस्तुत करना होगा। यह सरकारी नियमानुसार आवश्यक जरूरत है।

कि वे अपनी यात्रा का कार्यक्रम इस प्रकार सुनिश्चित करें कि वे स्वागत-कार्यालय के कार्य-समय के अन्दर ही आश्रम में पहुँचें।

(७) बिना पूर्व-सूचना दिये एवं पूर्व-अनुमति लिये आश्रम में ठहरने हेतु आने वाले अतिथियों तथा अभ्यागतों के अनुरोध पर गौर नहीं किया जायेगा।

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के लिए सूचना

शिवानन्द आश्रम, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय, ऋषिकेश आने वाले अतिथियों-अभ्यागतों की सिफारिश करने वाली शाखाओं से अनुरोध है कि वे उपर्युक्त दिशा-निर्देशों का अनुपालन करें।

शाखाएँ अपने सदस्यों/भक्तों का आश्रम मुख्यालय में आने के लिए सिफारिश सदा कर सकती हैं, किन्तु पूर्व अग्रिम सूचना देने और अनुमति-स्वीकृति-प्राप्ति सुनिश्चित हो।

बिना पूर्व-सूचना दिये एवं पूर्व-अनुमति प्राप्त किये शाखाओं से सिफारिशी पत्र लाने पर भी मुख्यालय में आवास-उपलब्धि हेतु आने वाले सदस्यों, भक्तों, अतिथियों और अभ्यागतों को आश्रम में ठहरने की (स्वीकृति) अनुमति प्राप्त नहीं हो सकेगी। **द डिवाइन लाइफ सोसायटी**

गुजरात प्रान्त दिव्य जीवन संघ सम्मेलन

परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज द्वारा संस्थापित दिव्य जीवन संघ वडोदरा शाखा एवं गुर्जर दिव्य जीवन संघ समिति, दिव्य जीवन संघ मुख्यालय के अमृत महोत्सव तथा वडोदरा शाखा की हीरक जयन्ती के उपलक्ष्य में एक-साथ मिल कर वडोदरा में तीन दिवसीय सम्मेलन ३० अक्तूबर से १ नवम्बर तक आयोजित कर रहे हैं।

इस सम्मेलन में मुख्यालय आश्रम के वरिष्ठ सन्त तथा अन्य संस्थाओं के सन्त एवं विद्वज्जन आशीर्वचन देने के लिए पधारेंगे। यह आत्मोत्थापक एवं प्रेरक उद्‌बोधन स्थानीय भाषा के साथ-साथ हिन्दी तथा अँगरेजी में भी होंगे। सम्मेलन के लिए निर्धारित स्थल सामा पानी की टंकी के निकट 'उर्मी विद्यालय' है। 'आध्यात्मिक ज्ञान के प्रसार-प्रचार' एवं 'विश्व-शान्ति की स्थापना' के उद्देश्य को ले कर किये जाने वाले इस सम्मेलन में दिव्य जीवन संघ की सभी शाखाओं से सम्बन्धित भक्त सादर आमन्त्रित हैं।

नामांकन शुल्कह्वह्वरुपये ५००/- आवासीय सुविधा तथा अन्य सभी सुविधाओं सहित

रुपये ३००/- आवासीय सुविधा से रहित

नामांकन एवं अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र : dlsvadodara@yahoo.com

पता : शिवानन्द भवन, रामजी मन्दिर गली, गवर्मेंट प्रेस के निकट, कोठी वडोदराह्वह्व३९० ००१, गुजरात। दूरभाष : ०२६५-२४१२१७६

मोबाइल : १. डा. जयन्त बी. दवे +९१९८२५०३५२३२;

२. महेश त्रिवेदी +९१९७२४३४८२३९